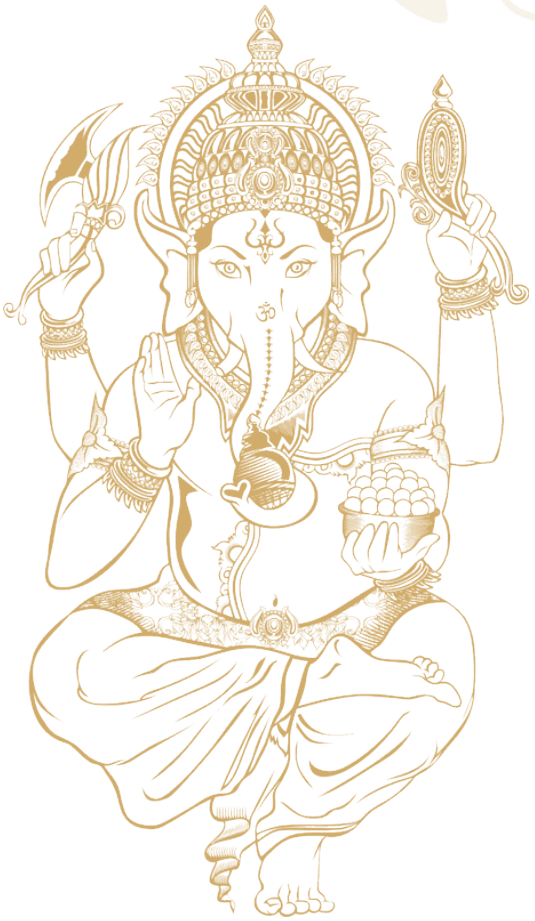

12/09/1999

31 Dec 2025

11:00 PM

Jind

Model: Baby-Horoscope **Order No: 120771601**

तिथि 31/12/2025 **समय** 23:00:20 **वार** बुधवार **स्थान** Jind **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:18
अक्षांश 29:19:00 उत्तर **रेखांश** 76:22:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:24:32 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	05:17:22 घं
वेलान्तर	00:03:00 घं
सूर्योदय	07:18:51 घं
सूर्यास्त	17:36:35 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	पौष
पक्ष	शुक्ल
तिथि	12
नक्षत्र	कृतिका
योग	शुभ
करण	बालव

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	मेष
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	गरूड़
युँजा	पूर्व
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	ए-एकलव्य
पाया(रा.-न.)	ताम्र-स्वर्ण
होरा	चंद्र
चौघड़िया	चर

विंशोत्तरी

सूर्य 0वर्ष 8मा 11दि

सूर्य

31/12/2025	
13/09/2026	
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	31/12/2025
शुक्र	13/09/2026

योगिनी

उल्का 0वर्ष 8मा 11दि

उल्का

31/12/2025	
13/09/2026	
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	31/12/2025
भद्रिका	13/09/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			26:26:45	सिंह	पू०फाल्गुनी	4	शुक्र	केतु	---	0:00			
सूर्य			16:04:17	धनु	पूर्वाषाढ़ा	1	शुक्र	सूर्य	मित्र राशि	0.82	भ्रातृ	पितृ	अतिमित्र
चंद्र			08:26:50	वृष	कृतिका	4	सूर्य	शुक्र	मूलत्रिकोण	1.44	पुत्र	मातृ	जन्म
मंगल		अ	18:15:33	धनु	पूर्वाषाढ़ा	2	शुक्र	राहु	मित्र राशि	1.03	अमात्य	भ्रातृ	अतिमित्र
बुध			04:01:03	धनु	मूल	2	केतु	चंद्र	सम राशि	0.87	ज्ञाति	ज्ञाति	मित्र
गुरु	व		27:10:16	मिथु	पुनर्वसु	3	गुरु	शुक्र	शत्रु राशि	1.25	आत्मा	धन	प्रत्यारि
शुक्र		अ	14:38:40	धनु	पूर्वाषाढ़ा	1	शुक्र	शुक्र	सम राशि	0.98	मातृ	कलत्र	अतिमित्र
शनि			01:55:47	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	राहु	सम राशि	1.13	कलत्र	आयु	प्रत्यारि
राहु	व		16:46:13	कुंभ	शतभिषा	4	राहु	शुक्र	मित्र राशि		---	ज्ञान	क्षेम
केतु	व		16:46:13	सिंह	पू०फाल्गुनी	2	शुक्र	चंद्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	अतिमित्र

लग्न-चलित

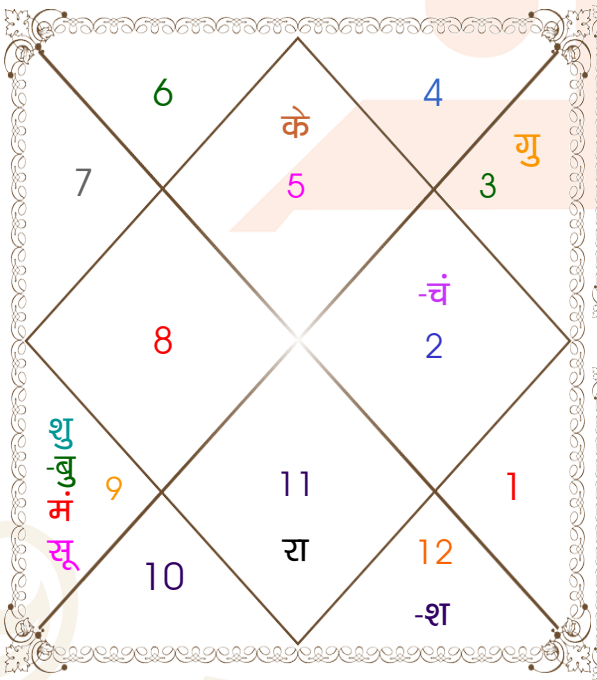

चन्द्र कुंडली

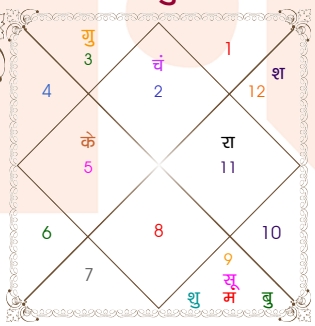

नवमांश कुंडली

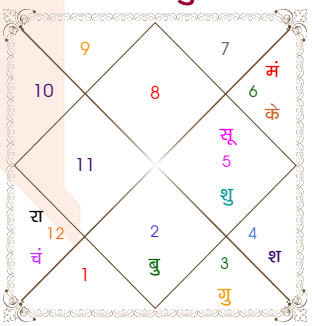

सर्वाष्टकवर्ग

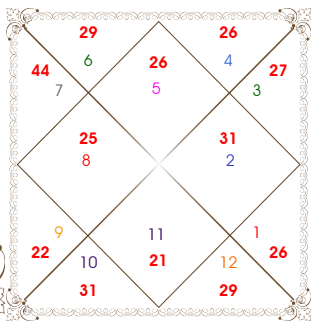

दशमांश कुंडली

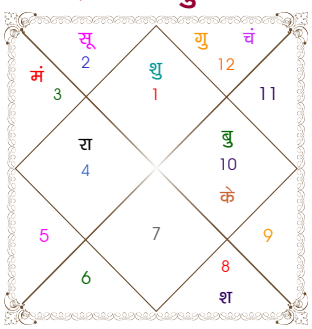

नक्षत्रफल

आप कृतिका नक्षत्र के चतुर्थ चरण में पैदा हुए हैं अतः आपकी जन्मराशि वृष तथा राशिस्वामी शुक्र होगा। नक्षत्रानुसार आपका राक्षस गण, अन्त्य नाड़ी, गरूड़ वर्ग, वैश्य वर्ण तथा मेष योनि होगी। चतुर्थ चरण के अनुसार आपके जन्म का आद्याक्षर "ए" अक्षर से प्रारम्भ होगा। यथा एकनाथ, एकेश्वर आदि।

कृतिका नक्षत्र मैं जन्म लेने के कारण आपकी प्रवृत्ति धन संग्रह से युक्त होगी। आप अपने कार्यों से कभी कभी स्वयं दुःखी रहेंगे तथा अन्य लोग भी कष्ट का अनुभव करेंगे। नींद आपको अधिक आयेगी फलतः किसी भी कार्य को करने में आपका मन नहीं लगेगा। इसी आलस्य के फलस्वरूप आप कभी कभी भूख से व्याकुल रहेंगे। अतः आलस्य की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए तथा सक्रिय होकर अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करना चाहिए।

कृपणः पापकर्माश्च क्षुधालुर्नित्य पीड़ितः।
अकर्म कुरूते नित्यं कृतिका संभवेन्नरः।।
मानसागरी

अर्थात् कृतिका नक्षत्र में उत्पन्न बालक शारीरिक तथा मानसिक रूप से व्याकुल, दूसरे की स्त्री में अनुरक्त, क्रूर तथा कृतध्न एवं धनी होता है।

भोजन को आप अधिक मात्रा में भक्षण करेंगे तथा किसी की भी बात को सहने में सर्वथा असमर्थ रहेंगे। आप तेजस्वी तथा अपने क्षेत्र में विख्यात पुरूष रहेंगे ।

बहुभुक् परदारतस्तेजस्वी कृतिकासु विख्यातः।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् कृतिका नक्षत्र में उत्पन्न जातक बहुभोजन कर्ता, परस्त्रीगमन करने वाला, असहनशील तथा विख्यात होता है।

विद्या को प्राप्त करने में आप अवश्य सफलता प्राप्त करेंगे तथा विद्या द्वारा ही अपनी आजीविका का अर्जन करेंगे। आप एक श्रेष्ठ विद्वान तथा उच्चधिकार प्राप्त पद पर आसीन हो सकते हैं।

तेजस्वी बहुलोद्भव प्रभुसमोडमूर्खश्च विद्याधनी।
जातक परिजातः

अर्थात् कृतिका में उत्पन्न जातक तेजस्वी, उच्चाधिकार प्राप्त, विद्वान तथा विद्या का धनी होता है।

सत्य का पालन आप अपने जीवन में समयानुसार करते रहेंगे। व्यर्थ इधर उधर भ्रमण करना आपकी स्वाभाविक प्रवृत्ति होगी । कटु शब्दों का भी आप कभी कभी अधिक प्रयोग

करेंगे जिससे श्रोता का मन अत्यन्त विकल एवं दुःखी होगा। आप अपने कर्तव्य पालन की भी उपेक्षा करेंगे फलस्वरूप घर वाले आपकी इस प्रवृति से अप्रसन्न रहेंगे। अतः यत्नपूर्वक अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए जिससे अन्य जन आपसे प्रसन्न रह सकें तथा कोई अनावश्यक समस्या उत्पन्न न हों।

क्षुधाधिकः सत्यधनैर्विहीना वृथाटनोत्पन्नमतिकृतध्नः।
कठोरवाग्गहितकर्म कृत्स्याचेत्कृतिका जन्मनि यस्य जन्तो।।
जातकाभरणम्

अर्थात् कृतिका में उत्पन्न मनुष्य भूख से पीड़ित सत्य एवं धन से रहित, व्यर्थ ही घूमने वाला, कृतध्न कटुवक्ता तथा अकर्तव्य करने वाला होता है।

ताम्र पाद में उत्पन्न होने के कारण आप राज्य या सरकार से धन लाभ अर्जित करने में हमेशा सफल रहेंगे तथा समाज में दूर दूर तक आपकी ख्याति व्याप्त रहेगी। देखने में आपका सौन्दर्य आकर्षक रहेगा। आप सन्तोषी प्रवृति के होंगे तथा अनावश्यक इच्छाओं को मन में उत्पन्न नहीं करेंगे। आप श्रेष्ठ आचरण से युक्त रहेंगे तथा सभी लोग आपका आदर सत्कार करेंगे। विविध प्रकार की धन सम्पतियों तथा सुखसंसाधनों से आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। माता पिता के प्रति आपकी पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा इनसे भी आप पूर्ण धन सम्पति को प्राप्त करेंगे। आप एक विद्वान पुरूष होंगे तथा ज्ञानार्जन में आपकी विशेष रूचि रहेगी। आप अपने द्वारा प्रारम्भ कार्यों में शीघ्र ही सफलता अर्जित करेंगे तथा नाना प्रकार के वाहन एवं भूमि से भी युक्त रहकर प्रसन्न रहेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धाभाव रहेगा। आप एक पराक्रमी पुरूष भी होंगे। आप में परोपकार की भावना भी रहेगी तथा सज्जन पुरूषों का आप नित्य आदर करेंगे। इसके अतिरिक्त आप में दानशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा।

आप वृषराशि में उत्पन्न हुए हैं अतः आपका लालिमायुक्त गौरवर्ण तथा स्थूल गाल होंगे। आपके नेत्र बड़े बड़े तथा मोटे होंगे। नैसर्गिक रूप से आलस्य का समावेश आपके स्वभाव में रहेगा। कुलीन लोगों के प्रति आपके मन में श्रद्धा तथा सेवा भाव रहेगा। ब्राह्मण तथा गुरूजनों के आप सच्चे सेवक तथा आज्ञाकारी होंगे। उनकी प्रत्येक बात को शिरोधार्य करना आप अपना परम कर्तव्य मानेंगे। बुद्धि आपकी अच्छी होगी तथा प्रकृति वात एवं कफ से युक्त रहेगी। आपके बाल घुँघराले होंगे तथा मन में दानशीलता की भावना भी होगी।

पृथुकगलकशोणः स्थूलनेत्रः प्रमादी।
कुलजनपरिसेवी प्रायशः सौख्य मेधी।।
द्विजगुरूजनभक्तः श्लेष्मवातस्वभावः।।
सितकुटिलचाग्रो दानशीलो वृषेजः।।
जातकदीपिका

जीवन में आप सर्वप्रकार के भौतिक सुखों का उपभोग करने वाले होंगे। आप शुद्ध तथा सफाई पसन्द व्यक्ति होंगे। आप समर्थवान पुरूष होंगे अतः प्रत्येक कार्य आपके द्वारा

सम्पन्न होगा। बुद्धि तथा बल का आपके पास अभाव नहीं होगा। धनार्जन पूर्णरूपेण होगा। अतः आपकी प्रकृति विलासी हो जायेगी। समस्त प्रकार के भौतिक सुखों की प्राप्ति पर आप उन्मुक्त भाव से व्यय करेंगे। चेहरे पर तेजस्विता बनी रहेगी तथा आपके सारे मित्र अच्छे गुण एवं स्वभाव वाले होंगे।

भोगीदाताशुचिर्दक्षो महासत्वो महामतिः।
धनी विलासी तेजस्वी सुमित्रश्च वृषे भवेत।।
मानसागरी

आपका चेहरा तथा जानु दीर्घाकार होंगे। आपके जीवन के प्रथम दो भाग कष्टपूर्वक तथा अन्तिम दो भाग सुखपूर्वक व्यतीत होंगे। त्याग की भावना भी आपके अन्दर होगी। इसका जीवन में कई बार अन्य लोग भी अनुभव करेंगे। आपकी प्रवृति क्षमाशील होगी तथा सामान्य दोषी व्यक्तियों को आप सहर्ष क्षमा कर देंगे। प्रारम्भ में आपको सामान्य रूप से कष्ट सहने पड़ेंगे तथा कठोर परिश्रम भी करना पड़ेगा। पीठ, चेहरे पर या बगल में आपके तिल मस्सा या व्रण का निशान हो सकता है।

पृथूरूवक्त्रः कृषिकर्मकृत्स्यात्।
मध्यान्ते सौख्यः प्रमदाप्रियश्च।।
त्यागी क्षमी क्लेशसहश्च गोमान।
पृष्ठास्यपार्श्वेङ्कयुतो वृषोत्थः।।
फलदीपिका

आपकी सन्तति में कन्या सन्तति की बहुलता रहेगी। आचरण आपका उत्तम होगा। आप जीवन भर धन का उपभोग करेंगे तथा दूर दूर तक आपकी कीर्ति फैलेगी।

दाताकान्त यशोधनोरूचरणः कन्या प्रजो गोपतौ।
जातकपरिजातः

आपका वक्षस्थल विशाल तथा बाल घने तथा घुँघराले होंगे। आपका यश चारों तरफ फैलेगा। आपकी बुद्धि दूध को दूध और पानी को पानी करने वाली होगी। अर्थात् आप न्यायप्रिय तथा विवेक अविवेक का भेद रखने वाले होंगे। आपकी चाल दर्शनीय एवं शरीर के सारे अंग सुडौल एवं दीर्घ होंगे।

व्यूढारस्कोडतदाता धनकुटिलकचः कामुकः कीर्तिशाली
कान्तः कन्या प्रजावान वृषसमनयनो हंसलीला प्रचारः
मध्यान्ते भोग भागी पृथूकटिचरणस्कन्धे जान्वस्यजङ्घः
साकः पार्श्वास्यपृष्ठे ककुदशुभगति क्षान्तियुक्तौ गवीन्दौ।।
सारावली

आप शनैः शनैः चलना पसन्द करेंगे तथा अपने सम्पूर्ण कार्यों को चतुराईपूर्वक सम्पन्न करेंगे। परोपकार की भावना भी आपके अन्तर्मन में व्याप्त रहेगी जिसे आप समय

समय पर पूर्ण करने का यत्न करेंगे तथा इसी प्रकार सत्कार्यों एवं पुण्य कार्यों से सुखी जीवन व्यतीत करेंगे।

स्थिरगति सुमति कमनीयतां कुशलता हि नृणामुपभोगताम्।
वृषगतो हिमगुर्भृशमादिशेत सुकृतिः कृतितश्च सुखानि च।।
जातकभरणम्

आपका स्वरूप सुन्दर एवं दर्शनीय होगा तथा आप सविलास गमनप्रिय व्यक्ति होंगे। सामान्य रूप से कष्ट सहन करने की शक्ति आप में विद्यमान होगी। आप उच्चाधिकार युक्त पद को भी प्राप्त कर सकेंगे। धन एवं ऐश्वर्य से आप आजीवन समृद्ध रहेंगे। आपके अन्दर जठराग्नि की भी प्रबलता रहेगी। स्त्रीवर्ग में आप काफी प्रिय होंगे तथा युवा एवं वृद्धावस्था में सुख प्राप्त कर आनन्द से रहेंगे। ऊसके अतिरिक्त आप सुस्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा विष्णु एवं शंकर भगवान की आराधना करने वाले होंगे।

कान्तः खेलगतिः पृथूरुवदनः पृष्ठास्यपार्श्वाङ्कितः।
त्यागी क्लेश सहः प्रभु ककुदवान कन्याप्रजः श्लेष्मलः।।
पूर्वैबन्धुद्यूनात्मजैर्विरहितः सौभाग्ययुक्तः क्षमी।
दीपाग्नि प्रमदाप्रियः स्थिर सुहृन्मध्यान्त सौख्यो गवि।।
बृहज्जातकम्

आपका जन्म राक्षसगण में हुआ है अतः आपकी प्रकृति कभी कभी अधिक बातें बोलने की होगी। आपके हृदय में करूणा का भाव रहेगा। छोटी छोटी बातों पर शीघ्र उत्तेजित होना तथा क्रोधित होना आपकी प्रवृति होगी। साथ ही अपने कार्य की सिद्धि के लिए किसी भी कार्य करने को तैयार रहेंगे बाद में चाहे उसका परिणाम कुछ भी क्यों न हो। बल का आप में अभाव नहीं रहेगा अर्थात् शक्तिशाली होंगे। बात बात पर प्रत्येक से वाद विवाद करना आपकी आदत होगी तथा बात बात पर लोगों से उलझना एवं बेतुके तर्क प्रस्तुत करने से अधिकांश लोगों का आपस में विरोध तथा शत्रुता का भाव रहेगा। अतः अन्य जनों से आप विन्रमता पूर्वक वार्तालाप करें तथा मधुर संबंध रखने के लिए यत्नशील रहें।

वृषभे सुशीलः देवेशदेवालयः धर्माधिकारी।
वृहत्पाराशर होराशास्त्र

आप उन्माद प्रमेह रोग से भी ग्रस्त हो सकते हैं। देखने में चेहरा भी सामान्य सुन्दर होगा लेकिन वाणी अत्यन्त ही कटु होगी। जो सुनने में अच्छी नहीं लगेगी। अतः अपनी वाणी में मधुरता का समावेश करें तथा यत्नपूर्वक इसी का अपने सम्भाषण में उपयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही

कोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

मेष योनि में जन्म लेने के कारण आप उत्साह से सम्पन्न होंगे। जो भी कार्य करेंगे सोत्साह उसे पूर्ण करेंगे। आपका प्रभाव प्रत्येक आदमी स्वीकार करेगा तथा युद्ध विद्या में भी आप निपुण होंगे। अपने सम्पूर्ण जीवन में आप धन ऐश्वर्य एवं वैभव तथा अन्य भौतिक सुखों का पूर्णरूप से उपभोग करेंगे। आपके अन्तर्मन में परोपकार की पवित्र भावना निहित होगी तथा आजीवन आप दूसरे की भलाई के लिए यथाशक्ति प्रयास करते रहेंगे।

महोत्साही महायोद्धा विक्रमीविभवेश्वरः।
नित्य परोपकारी च मेषयोनौ भवेन्नरः।
मानसागरी

अर्थात मेषयोनि का जातक अतिउत्साही, महायोद्धा, पराक्रमी, ऐश्वर्यवान तथा परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा दशम भाव में स्थित है। अतः आप माता के प्रिय रहेंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घायु होगी। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सुखसंसाधनों से वे युक्त रहेंगी एवं आपको जीवन में उन सभी सुखों से परिपूर्ण करने के लिए यत्नशील रहेंगी। उनके सहयोग से ही आप जीवन में नौकरी, व्यापार तथा यश को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

आप भी उनके प्रति श्रद्धावान रहेंगे एवं एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह उनकी आज्ञा का पूर्ण रूप से अनुपालन करेंगे। जीवन में उनकी सेवा सुविधा का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा यत्नपूर्वक उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग करते रहेंगे। आपके संबंध भी अच्छे रहेंगे एवं विचारों में विभिन्नता अल्प मात्रा में ही रहेगी। इस प्रकार एक दूसरे के लिए आप सामान्यतया शुभ ही रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति पंचम भाव में है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे एवं उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ होगी। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी यथाशक्ति सहायता करते रहेंगे। आपकी सन्तति के प्रति भी वे स्नेहशील रहेंगे तथा उनके पालन में अपनी पूर्ण रूचि प्रदर्शित करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी आप करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा आपसी मतभेदों में विभिन्नता होने से संबंधों में कटुता भी आएगी परन्तु कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप उनका पूरा ध्यान रखेंगे एवं उनकी आर्थिक तथा अन्य सहायता करने के लिए भी उद्यत रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म काल में मंगल पंचम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से शारीरिक रूप से व्याकुलता भी रहेगी।

आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेक्षा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। वे सुख दुःख में हमेशा आपका सहयोग करेंगे एवं आवश्यकतानुसार आपको आर्थिक या अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करेंगे। इसके साथ ही शिक्षा संबंधी कार्यों में भी वे आपको यथोचित सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान एवं स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में अल्प समय के लिए कटुता या तनाव की अनुभूति होगी। साथ ही आप सुख दुःख में उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार के समस्त वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं आपसी सहयोग से एक दूसरे को सुख प्रदान करेंगे।

आपके लिए मार्गशीर्ष मास पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तथा अमावस्या तिथियाँ, हस्त नक्षत्र, सुकर्मा योग, शकुनिकरण, शनिवार, चतुर्थ प्रहर तथा कन्या राशि में स्थित चन्द्रमा अशुभफल देने वाला है, अतः आप 15 नवम्बर से 14 दिसम्बर के मध्य 5,10,15 तथा अमावस्या तिथियों, हस्त नक्षत्र, सुकर्मा योग तथा शकुनिकरण में कोई भी शुभकार्य, व्यापार प्रारम्भ नवगृह निर्माण, लेन देन आदि कार्य न करें अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि ही होगी। इसके साथ ही शनिवार, चतुर्थ प्रहर तथा कन्या राशि के चन्द्रमा को शुभकार्यों में प्रयुक्त न करें। इन दिनों पर शारीरिक सुरक्षा का भी पूर्ण ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय प्रतिकूल चल रहा हो, शारीरिक व्याधियां हो रहीं हों तथा व्यापार हानि या नौकरी या प्रोन्नति में व्यवधान उत्पन्न हो रहा हो तो आपको नियमित रूप से शुक्रवार के उपवास करने चाहिए तथा श्वेतवस्त्र, चावल, शहद, श्वेत मोती, श्वेत पुष्प, कपूर आदि पदार्थों का भी दान करना चाहिए। इससे अशुभ फलों में भी कमी होगी। इसके अतिरिक्त शुभ फलों के प्राप्ति हेतु शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20 हजार जप किसी विद्वान के द्वारा सम्पन्न कराने चाहिए। श्रद्धानुसार आप शिव या विष्णु भगवान की आराधना भी कर सकते हैं।

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।